कला वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय सोनई

सत्र - 2019-20

* प्रोजेक्ट का नाम -:

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थिओं को हिंदी सीखने में आनेवाली समस्या।

* छात्र का नाम -

होळकर प्राजक्ता यशवंत.

* विषय - हिंदी (प्रोजेक्ट)

Scanned by TapScanner

अनुक्रमणिका

अ. नं	शीर्षक	पन्ना नं	शेरा
1.	प्रस्तावना	1	
2.	उद्देश्य	2	
3.	अ. 1 - हिंदी भाषा की मुश्किले	3 से 5	
4.	अ. 2. कक्षा में बहुभाषावाद	6 से 10	
5.	अ. 3. भाषा की समस्या	11 से 14	
6.	अ. 4. हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति	15 से 16	
7.	अ. 5. कक्षा में पढ़ाई जानेवाली हिंदी	17 से 18 तक	
8.	उपसंहार	19	

Scanned by TapScanner

प्रस्तावना

भाषा है। हिंदी भाषा हमारी
उसका हमारे हिंदी भाषा राजभाषा राष्ट्रिय
इसलिए जीवन में होने के कारण
भी पढ़ाई माध्यमिक स्तर महत्वपूर्ण स्थान है।
लेकिन हिंदी के लिए हिंदी पर और कॉलेज में
दिक्कते भी भाषा को भाषा को रखा है।
छात्रों को पढ़ाई में आनेवाली
को हिंदी आती हैं।
माध्यमिक स्तर के विदयार्थिओं
वर्तमान के भाषा बोलने में दिक्कते आती है।
के रूप में समय में हिंदी एक महत्वपूर्ण भाषा
में आज जानी जाती है। अनेक महाविद्यालय
भारत हिंदी भाषा को पढ़ाया जाता है।
उनकी देश में अनेक प्रांत होने बावजूद
हिंदी अनेक भाषाएँ का मिलाप है।
भविष्य भाषा हमारे आज और कैल के
है। के लिए हमें उसे सिखना जरूरी
पढ़ाई इसलिए पाठशाला में हिंदी भाषा को
में अनिवार्य किया है। लेकिन आज
हिंदी भाषा की पढ़ाई करने में छात्रों की
रुची कम दिखाई देती है। हिंदी भाषा का
महत्व जानकर भी छात्र हिंदी भाषा से
जैसे दूर ही भाग रहे है। हिंदी भाषा को
लेकर उनके दिल एक डर रहा है। जो
उन्हें हिंदी भाषा से अलग कर रहा है।
हिंदी भाषा को बोलने के लिए छात्रों अगणित
समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
कई बार मातृभाषा अलग होती तो कई बार
व्याकरण की गलतियाँ सामने आती है।
अनेक भाषाएँ होने के बावजूद भी हिंदी भाषा
को महत्वपूर्ण स्थान मिला है।

Scanned by TapScanner

उद्देश्य

i) हिंदी भाषा को पढ़ने या बोलने में आने-वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों को आने-वाली समस्याओं का अध्ययन करना।

ii) हिंदी भाषा बोलने या लिखते समय माध्यमिक स्तर के छात्र कौन-कौन सी गलतियाँ करते हैं। इन्हीं बातों का अध्ययन कर उनके कारणों जानकारी प्राप्त करना।

iii) हिंदी भाषा को समझने में छात्रों की क्या राय है उसका अध्ययन करना।

iv) हिंदी भाषा महत्वपुर्ण भाषा है इस बात को छात्रों को कितना ज्ञान है इस बात का अध्ययन करना।

v) हिंदी भाषा में छात्रों को रुचि क्यों नहीं इस बात को अध्ययन के आधार से सामने लाना।

vi) छात्रों के मन हिंदी के भाषा के बारे जो भ्रम है उसे जानकर, दूर करने का प्रयास करना।

vii) हिंदी भाषा की आवश्यकता से छात्रों को अवगत करना।

Scanned by TapScanner

अध्याय - 1

★ हिंदी भाषा की मुश्किलें ★

भारतवर्ष को स्वतंत्र हुए 70 वर्ष से अधिक हो चुके हैं। इस दौरान राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हम बहुत कामयाबी हासिल कर चुके हैं। अंतरिक्ष में भी कामयाबी का लोहा मनवा चुके हैं। राष्ट्र ने बहुआयामी प्रगति की है, बावजूद इसके कुछ विषय ऐसे हैं जो महत्वपूर्ण होते हुए भी आज तक उनकी मुश्किलें बनी हुई हैं। हिंदी भाषा एक ऐसी ही समस्या है। आज विश्व के कई देशों में हिंदी पहले से ज्यादा इस्तेमाल हो रही है फिर भी इसे अपने वतन सम्मान अब तक नहीं मिला जो मिलना चाहिए था और जिसकी यह भाषा हकदार है। हम बात कर रहे हैं हिंदी भाषा से जुड़ी हुई चुनौतियों की। चुनौतियों की बात आती है तो सबसे पहले तो संपूर्ण देश की कोई एक राष्ट्रभाषा नहीं है।

पंडित जवाहरलाल ने कहा था " वह राष्ट्र गूंगा है जिसकी कोई अपनी राष्ट्रभाषा नहीं है।" राष्ट्रभाषा पहचान होती है किसी राष्ट्र की। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत संविधान सभा द्वारा हिंदी राजभाषा स्वीकार किया गया। राजभाषा होगी तो इसके कार्यान्वयन और हिंदी को उसका स्थान दिलाने के लिए 15 वर्ष का समय दिया गया जिससे कर्मचारी राजनेता जिन्हें जरूरत हो (खासकर दक्षिण के राज्यों में) इसे सीख सकें। सरकार द्वारा इस क्षेत्र में काम भी किए जाने लगे। लेकिन कुछ परिणाम आता उससे पहले ही दक्षिण से विरोध के स्वर उठने लगे। उन्हें लगा हिंदी उनपर थोपी जा रही है। इसपर राजनीति होने लगी, तर्क दिया जाने लगा कि हिंदी को अनिवार्य बनाने से कुछ राज्यों के लोग, खासकर दक्षिण के लोग नौकरी में

Scanned by TapScanner

पीछे हो जाएंगे। आलोचना, प्रदर्शन नाम हुए और सरकार को पीछे हटना पड़ा। सरकार ने हिंदी को जबरदस्ती न अपनाए जाने का वचन दिया।

14 सितंबर यानी के हिंदी दिवस के दिन बहुत बढ़-चढ़कर हिंदी भाषा के भूत, वर्तमान और भविष्य पर चर्चा, गोष्ठियाँ होती हैं पर परिणाम कुछ नहीं आता। राजभाषा को धरेलू स्तर पर ही मुश्किलों से लड़ना पड़ा रहा है। वैश्वीकरण के माहौल में अंग्रेजी भाषी लोगों कि संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है। हिंदी कि तुलना में अंग्रेजी सशक्त भाषा मानी जाती है। हिंदी को पिछड़ेपन का ठप्पा लगा दिया जाता है। अंग्रेजी का ऐसा वर्चस्व बनता जा रहा है कि हिंदी बोलनेवाले को पिछड़ा करार दिया जाता है। लोगों कि इस मानसिकता को तोड़ने में हिंदी पिछड़ती जा रही है। भाषायी आधार पर राज्यों के पुनर्गठन ने हिंदी भाषा को बहुत पीछे छोड़ दिया है। इसी की खामियाजा हमें भाजतक भुगतना पड़ रहा है कि पुरे देश कि एक सर्वसामान्य भाषा नहीं है।

शिक्षा के व्यावसायीकरण का असर है कि आज लोग अंग्रेजी मीडियम शिक्षा को हि चुनते हैं। आजकल तो हिंदी रोचक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। हिंदी भाषा में उन्हें करियर नहीं आता। यह सोच और व्यवस्था से इस भाषा को बहुत खतरा है। इस मामले में हमें दुनिया के दुसरे विकसित देशों से सीख लेनी चाहिए जो अपने देश में मातृभाषा को तरजीह देते हैं। हमें अंग्रेजी का भी अध्ययन करना चाहिए साथ में आनेवाली पीढ़ी को भी इसके लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। भारत का कोई भी राज्य हो अपनी मातृभाषा से वंचित क्यों?

Scanned by TapScanner

राष्ट्र को एक नागरिक होने के नाते हमें अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी और राष्ट्रभाषा के महत्व को समझना होगा। कुछ पहल सरकार और शिक्षा विभाग को भी करनी होगी। आज के बच्चे ही कल के भविष्य हैं, शुरुआत से ही भाषा की अहमियत बतानी होगी। मतलब हर क्षेत्र में काम करने कि जरूरत हैं। अंत में एक अपील सरकार और राजनितिक दलों से भी है कितने चुनाव आए और गए, सरकारे बदली लेकिन किसी पार्टी या राजनितिक दलों की तरफ से मातृभाषा हिंदी पर कोई बात नहीं होती है क्या। इसका आपसे कोई लेना - देना नहीं हैं।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में हिन्दी बोलने में आनेवाली प्रमुख समस्

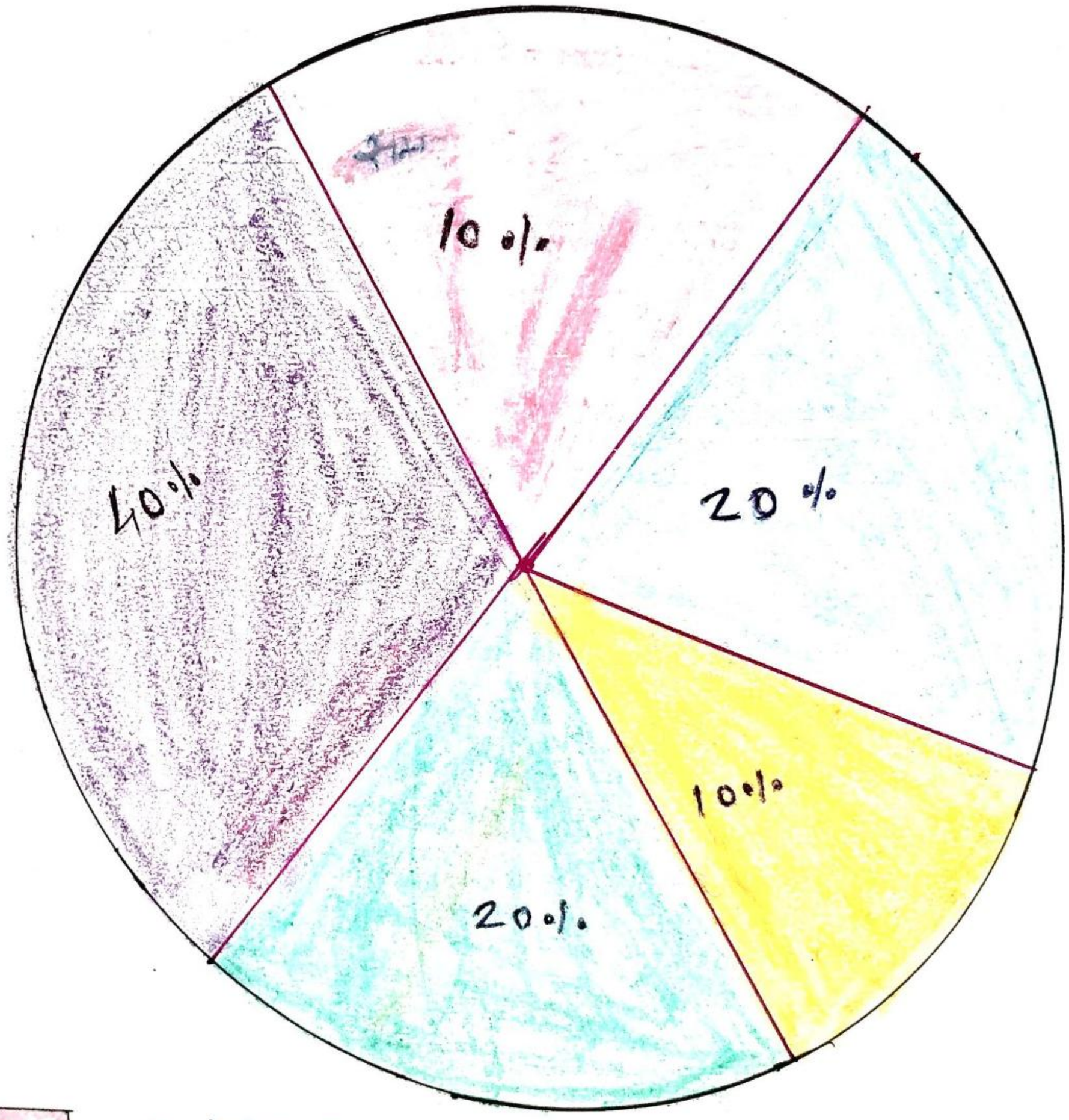

1) → समयसिमा में हिंदी को पढ़ने वाले छा
2) → व्याकरण को न समझने वाले छात्र।
3) → पर्यायवाची शब्दों को न जानने वाले छात्र।
4) → अनुवाद की समस्या को झेलने वाले छात्र।
5) → हिंदी मातृभाषा नहीं होने छात्रों की संख्या।

Scanned by TapScanner

अध्याय - 2

★ कक्षा में बहुभाषावाद ★

कक्षा में यह वास्तविकता के बारे में है जहाँ विद्यार्थियों की मातृभाषा और विद्यालय की भाषा स्थान नहीं होती है। ऐसी पारिस्थितियों को अक्सर चुनौतीपूर्ण माना जाता है। बहुभाषावाद के प्रति जागरूकता और सकारात्मक समझ को उजागर करना है, जिसके अंतर्गत यह बात बताई गई है कि बहुभाषावाद के माध्यम से भाषा कक्षा में सभी विद्यार्थियों को एक साथ पढ़ायी जा सकती है।

विद्यार्थी उस भाषा में सर्वश्रेष्ठ ढंग से सीखते हैं जिसे वे सबसे अच्छी तरह जानते हैं। लेकिन कक्षा में बहुभाषावाद होने के कारण वे किसी एक भाषा को नहीं अपना सकता है और इसी कारण सभी भाषा का अधूरा ज्ञान उन्हें प्राप्त होता है।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थिओं को हिंदी बोलने में आनेवाली समस्याएँ -:

1) मातृभाषा के स्थान पर किसी अन्य भाषा का होना -:

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थिओं की यह एक प्रमुख समस्या है कि उनकी मातृभाषा कोई और होती है बल्कि वह हिंदी नहीं होती है। अन्य भाषा होने के कारण उन्हें दोनों भाषाओं को सिखना पड़ता है। इसी कारण हिंदी भाषा को सिखने में उन्हें दिक्कते आती है। स्कुल में जाकर वह हिंदी सिख लेते भी है तो उनकी अलग मातृभाषा होने के कारण वह फिर से उस भाषा के शब्दों को भूल जाते हैं। और इसी कारण

छात्र स्कुल का वातावरण खत्म होते ही हिंदी भाषा को भूल जाते हैं और मातृभाषा का उपयोग करते हैं अपनी बातचीत में। इसी कारण हिंदी भाषा पिछे रह जाती है और मातृभाषा आगे आकर अपना स्थान प्रबल बनाती है। स्कूल में आए कम - से - कम 60 % छात्रों की मातृभाषा में ही बातचीत होती है, इसलिए हिंदी भाषा उन्हीं के लिए मायने नहीं रखती है।

2) सिमित समय के लिए भाषा का प्रयोग :-
माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए यह भी एक समस्या होती है कि वह हिंदी भाषा का प्रयोग सिर्फ सिमित समय तक ही करते हैं। 10 % छात्र तो ऐसे होते है कि उनकी भाषा अलग होती है वे उसी कारण सिर्फ स्कूल में रहते समय में ही वह हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं। एक निश्चित समय में वह हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं। स्कूल में रहते समय उन्हें हिंदी भाषा अच्छी लगती है। लेकिन स्कूल का समय खत्म होते ही वह हिंदी भाषा को भूल जाते हैं। दूसरे दिन वे फिर वही वे रुझान करते हैं। एक निश्चित समय में हिंदी भाषा को पढ़ने के कारण उनकी पढ़ाई में भी एक प्रकार की निश्चितता आती है। और उनकी पढ़ाई एक निश्चित समय सिमा में बँधी जाती है।

Scanned by TapScanner

3) अशुद्ध शब्दोच्चार का होना :-

हिंदी भाषा को पढ़ते और बोलते समय बहुत से छात्र उनको गलत तरीके से पढ़ते या गलत तरीके से बोलते हैं। हिंदी भाषा को वह अच्छी तरह बोलना और पढ़ना भी जानते हैं लेकिन उनकी वाणी से अशुद्ध शब्दों का उच्चारण होता है। स्कूल में कम - से कम ज्यादातर छात्रों को इसी परेशानी को झेलना पड़ता है। वो लिखना भी जानते हैं, हिंदी भाषा को अच्छी तरह लिखकर वह परीक्षा में अच्छे अंक भी प्राप्त करते हैं। लेकिन पढ़ाई की बात जब आती है तो उन्हें दिक्कते होती है। इसी कारण वे लिखने में आगे होते हैं और पढ़ाई में पिछे रह जाते हैं। इसी कारण हिंदी भाषा के बारे में उनके दिल में एक अलग का सा डर समा जाता है।

4) व्याकरण में कि जानेवाली गलतियाँ :-

हिंदी व्याकरण में प्रमुखता से बहुत से छात्र गलतियाँ करते हैं। लिखते समय अलग लिखते है और बोलते समय अलग बोलते हैं। कौन से वर्ण का प्रयोग क्यों करना है इसकी पूरी जानकारी उन्हें नहीं होती है। हिंदी में वर्ण, ~~वाक्य~~, शब्द, वाक्य में कौन से व्याकरण का प्रयोग करना है इस बात को वह नहीं जानते हैं।

Scanned by TapScanner

व्याकरणिक की भाषा को न समझने वाले छात्रों की संख्या कम - से - कम 10 % छात्रों में होती हैं। अनेक छात्रों से तो - ह्रस्व और दीर्घ की गलतियाँ होती हैं। लिखते समय अगर ह्रस्व लिखा तो बोलते समय दीर्घ का उच्चारण होता हैं। लिखते समय भी दीर्घ कब और कहा लिखे, ह्रस्व का प्रयोग वाक्य में कहा करे इन सब की जानकारी न होने के कारण भी छात्रों में हिंदी भाषा के बारे में मन में डर पैदा हुआ हैं।

अनुवाद की समस्या :-

माध्यमिक स्तर के छात्रों के साथ कई बार ऐसा होता है की उन्हें कोई अन्य भाषा का अनुवाद हिंदी भाषा में करने में नौबत आती हैं। अनुवाद करते समय खास बातों का ध्यान रखना पड़ता की जिस भाषा से अनुवाद करना है और जिस भाषा में करना हैं उन दोनों भाषाओं का ज्ञान आवश्यक होता हैं। लेकिन हिंदी मातृभाषा नहीं हैं इसके कारण हिंदी शब्दों को कमे मात्रा में छात्रों को जानते हैं। उपर से कुछ शब्दों का प्रयोग हो गया तो सजा का भी डर रहता हैं। स्कूल में कम से कम 20 % छात्रों को अनुवाद की समस्या होती हैं। इसी कारण अनेक छात्रों को अपने शब्दों के ज्ञान को बढ़ाना पड़ता हैं।

Scanned by TapScanner

6) हिंदी भाषा के बारे में फैली गलतफैमियाँ :-

बहुत से छात्रों के मन में हिंदी भाषा को पढ़ने और बोलने के बारे में गलतफैमियाँ फैली हुई हैं। हिंदी भाषा पढ़ने में और बोलने में कठिन होती है। ऐसा कई छात्रों का मानना होता है। इसी कारण बाकी छात्रों के मन में भी डर पैदा होता है। हिंदी भाषा को पढ़ने के लिए संस्कृत भाषा का ज्ञान आवश्यक होता है। ऐसा भी कई छात्र मानते हैं। और इन गलतफैमियों को उन्होंने अपने दिल में दबाए रखा है।

संस्कृत के शब्द हिंदी भाषा में होते हैं यह गलत है लेकिन छात्रों के मन में डर पैदा हुआ है।

हिंदी भाषा में आए अनेक पर्यायवाची शब्दों के बारे में विद्यार्थियों को पता नहीं होता है। एक शब्द के लिए दूसरे शब्द की जानकारी नहीं होती है।

Scanned by TapScanner

अध्याय - 3

भाषा की समस्या

Page : 11
Date : / /

अंग्रेजों के भारत में आने के समय तक भारत के आम नागरिक दैनिक कार्यों में स्थानीय भाषाओं का व्यवहार करते थे: उच्च शिक्षा, शास्त्रीय चर्चा जैसे कार्यों के लिए संस्कृत का व्यवहार करते थे। मुस्लिम सभ्यता के संपर्क के बाद किन्हीं - किन्हीं कार्यों के लिए फारसी का प्रयोग भी होने लगा था।

अंग्रेजों ने सत्ता हथियाने पर पहले तो हिंदू - उर्दू मिश्रित भाषा में सरकारी कामकाज की भाषा बनाया, ताकि वह सारा काम उनकी देख - रेख में चले। इस काम के लिए उन्हें भारतीय भाषाओं को जानने वाले ऐसे भारतीय चाहिए थे, जो अंग्रेजी के भी जानकार हों। अतः उन्होंने अंग्रेजी शिक्षा की शुरुआत की, जिसका माध्यम भी अंग्रेजी को ही बनाया। संस्कृत और फारसी से उन्हें कोई लेना-देना नहीं था। अंग्रेजी काल में और उसके पश्चात समय - समय पर शिक्षा के माध्यम की भाषा की समस्या पर चिंतन - मनन किया गया और विभिन्न प्रकार के उपायों को अपनाया गया।

वर्तमान समय में अनिवार्य शिक्षा अधिनियम के अनुसार माध्यमिक स्तर तक मातृभाषा (क्षेत्रीय भाषा) को शिक्षा का मध्यम स्वीकार किया गया है, परंतु उच्च शिक्षा स्तर पर आज भी यह समस्या बनी है कि, क्या उस स्तर पर शिक्षा का माध्यम अँग्रेजी ही हो। अनेक महाविद्यालयों में अधिकांश विद्यार्थियों में अधिकांश विद्यार्थियों को हिंदी भाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान किया जा रहा है। ऐसा हिंदी भाषी क्षेत्रों में ही है। केंद्र शासित क्षेत्रों व केंद्रिय विश्व - विद्यालयों में शिक्षा का माध्यम अँग्रेजी ही है। अनेक शिक्षा - संस्थानों में हिंदी या क्षेत्रीय भाषा तथा अँग्रेज़ी भाषाओं के

माध्यम से शिक्षा प्रदान व प्राप्त की जाती है।

इस प्रकार अँग्रेजी और हिंदी के मुद्दे पर फँसकर शिक्षा के माध्यम की माध्यम एक बहुत बड़ी समस्या बन गई है, और इस अनसुलझी समस्या ने शिक्षा के स्तर को एकदम निम्न स्थिति में पहुँचा दिया है।

हिंदी अध्यापन की शुरुआत बंगाल के सेंचल एशियाटिक सोसायटी से हुई। उसी की शाखाएं, बाद में बनारस, इलाहाबाद, दिल्ली, पटना, सागर, अलीगढ़ आदि जगहों में पुष्पित-पल्लवित हुई।

हिंदुस्थान एक ऐसा बहुभाषा-भाषी देश है, जिसकी भाषा समस्या काफी उलझ गई है। चूंकि भाषा का संबंध कई प्रकार की भावुकता, जानपादिक मोह और पूर्वग्रहों से जुड़ा हुआ है, इसलिए बहुभाषाभाषी देशों में भाषा की समस्या प्रायः संकुल और उलझी रहती है। किंतु मनुष्य समस्याओं का समाधान करनेवाला प्राणी होने के कारण भाषा समस्या का भी कोई न कोई समाधान अपने देश और समाज के लिए कर ही लेता है। रूस, स्विट्जरलैंड आदि अनेक देशोंने अपनी उलझी हुई भाषा समस्या का समाधान बहुत ही खूबी के साथ कर लिया है।

हमारी संविधान स्वीकृत आधुनिक भारतीय भाषाओं में सिंधी, बंगला, पंजाबी और उर्दू चार ऐसी भाषाएँ हैं, जो पाकिस्तान के भाषा-परिकर में आती हैं, यानी के उक्त भाषाएँ बोली जाती हैं।

संविधान स्वीकृत के अनुसार भाषाओं में कोई एक भाषा ऐसी हो, जिससे संपर्क भाषा और राष्ट्रभाषा का काम लिया जा सके। इसी दृष्टि से संविधान स्वीकृत भाषाओं के बीच हिंदी

Scanned by TapScanner

को राष्ट्रभाषा बनाने की बात आती है। सच पूछा जाए तो 'हिंदी भाषा' की सामर्थ्य और हिंदी भाषियों की संख्या दोनों ही हिंदी को केवल भारत की संपर्क भाषा या राष्ट्रभाषा नहीं, बल्कि राष्ट्रसंघ की भाषा बनाने के योग्य है। हिंदी भाषा संस्कृति की भाषा होने के साथ ही हमारे लिए प्रयोजन की भाषा भी है।

अभी दुनिया के लगभग 38 देशों में हिंदी बोली और समझी जाती है। विदेश में लगभग 98 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई होती है। यहाँ यह कहना आवश्यक प्रतीत होता है कि अब भाषा की प्रतिष्ठा केवल उसके रचनात्मक साहित्य और उसके सांस्कृतिक महत्व पर निर्भर नहीं करती। अब वह भाषा अधिक आगे बढ़ सकती है, जिसके पीछे अत्याधुनिक तकनीकी उपकरणों का बल हो और जिसकी पहुँच वर्तमान सभ्यता के विभिन्न साहित्येतर क्षेत्रों में भी हो। राष्ट्रसंघ की भाषा बनने के लिए एक प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में हिंदी को समग्र भारतवर्ष के अर्थतंत्र, वाणिज्य, व्यवसाय, मौद्रिक प्रचलन, लेन-देन, अधिकोषण आदि के विभिन्न प्रभागों के दैनंदिन कार्यों, लेखा संधारणों एवं अन्य अनेक प्रयोजनों से घनिष्ठ रूप में जुड़ना होगा। किसी भाषा का सांस्कृतिक या ज्ञानात्मक रूप, जिसके द्वारा वह अपने देश की संस्कृति का अग्रगामी नेतृत्व करता है।

जिस देश में 367 मातृ भाषाएं हैं और जिस देश में लगभग 58 भाषाएँ विद्यालय स्तर पर शिक्षा के माध्यम की भाषा के रूप में स्वीकृत हैं, उस देश के एक बलशाली राष्ट्रभाषा की प्राप्ति के लिए तथा उस राष्ट्रभाषा के माध्यम से

Scanned by TapScanner

विश्व मंडली में अपनी अलग पहचान बनाने के लिए कई प्रकार की संकीर्णताओं, आंचलिक प्रवृत्तियों तथा भावुकता के उद्वेगों से ऊपर उठना होगा।

इतना ही नहीं, उस देश के लिए यह भी आवश्यक है कि वह राष्ट्र की एकता को सर्वोपरि महत्व देते हुए अपनी भाषा समस्या के समाधान हेतु अपने राष्ट्रीय विवेक को सदैव जाग्रत रखे, राष्ट्रभाषा के चयन संदर्भ में किसी प्रकार के तदर्थ चिंतन को या तदर्थ व्यवस्था को अधिक दिनों तक नहीं होने दे तथा एक राष्ट्र के रूप में अपने संवैधानिक संकल्प और कर्म की एकरूपता के द्वारा अनेक विकल्पों वाली अनिश्चितता या दिशाहीनता अथवा सांस्कृतिक अनिर्णय वाली दशा को शीघ्र समाप्त करें।

Scanned by TapScanner

अध्याय - 5

हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति

हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति और भविष्य - भाषा भावों और विचारों की संवाहक होती हैं। भाषा का स्वरूप निरंतर बदलता रहता है। और यह सभी भाषाओं के बारे में कहा जा सकता है हम सभी इस तथ्य से अवगत हैं कि वर्तमान हिंदी का उद्भव संस्कृत भाषा से हुआ है और काल के अनुसार यह पालि, प्राकृत और अपभ्रंश का चोला बदलती हुई वर्तमान स्वरूप को प्राप्त हुयी।

हिंदी एक आधुनिक भारत - आर्य भाषा है, और संस्कृत की वंशज है, जो भारत के उत्तर पश्चिमी सीमाओं में आर्यन बसके वालों की बोली उद्भूत हैं। समय अवधि के साथ विकास के विभिन्न चरणों से गुजरती हुई शास्त्रीय संस्कृत से पाली - प्राकृत और अपभ्रंश तक, हिंदी का उद्भव 10 वीं शताब्दी में पाया जाता हैं। हिंदी को हिंदवी, हिंदुस्तान और खड़ी बोली के रूप में जाना जाता है। देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी भारत गणराज्य की राष्ट्रीय आधिकारिक भाषा है और इसे दुनिया के सबसे व्यापक रूप में स्थान दिया गया हैं। इसके अलावा, हिंदी बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और राजस्थान राज्य की राज्य भाषा भी हैं।

दुनिया भर में लगभग छह सौ मिलियन लोग हिंदी को पहली बार या दूसरी भाषा के रूप में बोलते हैं। शताब्दी हिंदी का साहित्यिक इतिहास बारहवीं शताब्दी में पाया जाता हैं।

आज हम जो हिंदी बोलते हैं वह ब्रज भाषा एवं अवधी भाषा से परिवर्तित होकर इस स्वरूप में आई है। ब्रज भाषा का विस्तार अवधी भाषा से तुलनात्मक रूप से व्यापक है। बाद में ये भाषाएं अन्य पड़ोसी भाषाओं से प्रभावित हुई। चूंकि, मुगलों, तैमूर और अलेक्जेंडर ने भारत पर हमले से भारत में नई संस्कृतियों के स्पष्ट रूप दिखाई देने लगा।

दुनिया का कोई भी देश भारत की भाषाई विविधता की बराबरी नहीं कर सकता भारत में मातृभाषा की संख्या 1652 है, (जैसा कि 1961 की जनगणना में सूचीबद्ध है) भारत का संविधान किसी भी भाषा को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा नहीं देता है। हालांकि गणराज्य की केंद्र सरकार की आधिकारिक भाषा हिंदी है। भारतीय संविधान के अनुसूची में 22 भाषाओं के रूप में संदर्भित किया गया है। इन भाषों को मान्यता, स्थिति और आधिकारिक प्रोत्साहन दिया गया है।

Scanned by TapScanner

अध्याय - 6

कक्षा में पढ़ाई जानेवाली हिंदी

Page : 17
Date : / /

कक्षा में पढ़ाई जानेवाली हिंदी को बेहतर बनाना होगा।

स्कूल की हिंदी को देखें तो बच्चा में निराशा घर करती है। हिंदी को दुरुस्त करना है। तो हमें कक्षा की हिंदी को बेहतर करना होगा। तो हमें कक्षा की जब हमारे शिक्षक शिद्दत से हिंदी को कक्षा में बरतें।

यह आलेख हिंदी दिवस पर भाषण के रूप में लिखना मकसद नहीं है। बल्कि हिंदी कैसी पढ़ी और पढ़ाई जा रही है उसकी ओर नज़र आकर्षित करना है। अकसर हिंदी शिक्षण वाला पक्ष हमसे छूट-सा जाता है। हम कविता और कहानी या फिर उपन्यास के जरिये हिंदी को बचाने की बात करते हैं जबकि हमें बात को नजरंदाज नहीं करना चाहिए कि किस प्रकार की हिंदी प्राथमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण पाठ्यक्रम में एक केंद्रिय भूमिका निभाती है। उसे समझने की आवश्यकता है। किसी बच्चे के व्यक्तित्व निर्माण में और लोगों के साथ संवाद में, भाषा के आधारभूत कौशल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जो क्रमशः सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना आदि, हैं।

भाषा का सबसे महत्वपूर्ण कौशल सुनना है। अगर किसी भाषा को हम सीखना चाहते हैं तो उसे सुनने और बोलने का मौका मिलने पर हम अपनी से उस भाषा को सीख सकते हैं। स्कूल में बच्चे की पढ़ाई हिंदी माध्यम में होती है तो बच्चे को पहली बार कक्षा से ही हिंदी भाषा

Scanned by TapScanner

सुनने का ज्यादा से मौका देना चाहिए। ताकि बच्चे इस भाषा में सहज हो सकें। इसके लिए बच्चे को कहानी सुनाने और बालगीत सुनने और बोलने का मौका दिया जा सकता है। इससे बच्चे के मन में हिंदी भाषा का व्याकरण अपने आप बनता जाएगा। एक समय के बाद बच्चा बहुत आसानी से हिंदी भाषा के छोटे - छोटे वाक्यों का उच्चारण कर पाएगा। मगर इसके लिए कक्षा में बच्चे के घर की भाषा को भी जगह देनी होगी ताकि बच्चे अपने अनुभवों को कक्षा में व्यक्त करने में किसी तरह कि झिझक या संकोच का अनुभव न करें। संदर्भ के माध्यम से किसी भाषा को सीखने में काफी आसानी होती है।

भाषा को अकसर अभिव्यक्ति का माध्यम भर माना जाता है। इसी के अनुरूप भाषा की कक्षाओं की शिक्षण प्रक्रिया संचालित होती है। जहाँ भाषा को केवल एक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। पाठ्यपुस्तक साधन की बजाय साध्य बनकर रह जाती है। और सारा ध्यान भाषा सीखने की बजाय पाठ के पीछे के अभ्यास हल करने तथा उच्चारण और लिपि की शुद्धता तक सीमित होकर रह जाता है। यदि भाषा की प्रकृति और इसके उद्देश्यों को समझा जाए तो विचारों की अभिव्यक्ति भाषा का एक बेहद छोटा व सीमित क्षेत्र है। भाषा हमारे जीवन में इससे कहीं बढ़कर काम करती है। भाषा हमारी समझ का आधार है। यह विचार करने, तर्क करने, चिंतन करने दूसरे की बात समझने जैसे बहुत से काम करती है। दूसरे शब्दों में भाषा हमारे सपुचे जीवन का आधार है। भाषा हमें समाज से जोड़ती है।

Scanned by TapScanner

उपसंहार.

हिंदी भारत देश की राष्ट्रभाषा है। भारतीय के जीवन में और राजनीतिक स्तर पर हिंदी भाषा को महत्वपुर्ण माना जाता है। इसी कारण हिंदी भाषा को पाठशाला में पढ़ाया जाता है। लेकिन पाठशाला में भी छात्रों को हिंदी भाषा को पाठशाला में सिखने को छात्रों को दिक्कते आती है। हिंदी भाषा का महत्व अन्य भाषाओं के जैसा ही है। मातृभाषा अलग होने के कारण छात्रों को हिंदी भाषा को सिखने में आनेवाली दिक्कतों को अध्ययन माध्यम से समझा जा सकता है।

हिंदी भाषा के लिए अध्ययन के जरुरत हैं और छात्रों को उसी बात को समझना चाहिए। पढ़ाई में आनेवाली दिक्कतों को पार करके छात्रों को हिंदी भाषा को बोलना, सिखना चाहिए और हिंदी भाषा को अपनाना चाहिए। हिंदी को डरकर उस से दूर भागने की बजाय उसे समझकर सिख लेना चाहिए। हिंदी भाषा हमें देन के रुप में मिली है जिसका हम छात्रों को उपयोग करना चाहिए। हिंदी पढ़ने समय या बोलते समय छात्रों को आनेवाली अनेक समस्याएँ सामने आती है। बोलते समय छात्र उच्चारण की गलतियाँ करते है। व्याकरण कि कमि शब्दोच्चार या शब्द भंडार है। या भी छात्रों में दिखाई देती है। हिंदी भाषा में संस्कृत नहीं होती है इस बात को भी छात्रों को समझ लेना चाहिए।